

नामस्मरण के आरम्भन से प्रगट केवलज्ञान

प्रथम तीर्थपति ऋषभदेवजी की माता मरुदेवा ने इस अवसर्पिणी काल में प्रथम मोक्ष प्राप्त किया। इसका मूल-मुख्य कारण है - नामस्मरण।

परमात्मा ने दीक्षा ली, तत्पश्चात् 1000 वर्ष पर्यन्त पुत्र के प्रति स्नेहरागवश मरुदेवा माता ने ऋषभ-ऋषभ रटन किया। इस वजह से अन्य सभी सामग्रीओं पर रही हुई राग-आसक्ति हटकर एक मात्र ऋषभदेव पर स्थिर हो गयी। जिसके कारण आत्मा पर रही कर्मराशि भी दूर हुई, परिणाम अन्यत्व भावना एवं क्षपक श्रेणि सुलभ हो गई।

पुत्र भरत ने कहा कि "आप मुझे रोज कहती हो, मैं राज-पाट भोग रहा हूँ, वो वन में घूम रहा है, चलो आज आपके पुत्र का ऐश्वर्य बताता हूँ", मरुदेवा "प्रसन्न-प्रसन्न" हो गये।

मरुदेवा माता ने हाथी पर आसीन होकर समवसरण की ओर प्रस्थान किया। परमात्मा का अद्भुत बाह्य वैभव देखा, साथ ही आंतर वैभव भी देखा। जिसे देखकर मरुदेवा माता स्वयं के अभिमुख हो गई, "ऋषभ तो ऋषभ में मस्त है, मैं भी मेरे में मस्त हो जाऊँ", मरुदेवा माता द्वारा 'ऋषभ ऋषभ' का 1000 वर्ष तक किए गए रटन ने जो निर्मलता दी, वो यहां साक्षात् प्रगट हो गई। मरुदेवा माता अन्यत्व भावना में रहकर, क्षपकश्रेणि पर आरुढ हुई और वही केवलज्ञान हुआ... यह है नामनिक्षेप की महिमा...

